SAFALTA CLASS™

An Initiative by अमर उजाला

CTET - P-2 - SST

HISTORY BY

SUJEET BAJPAI SIR

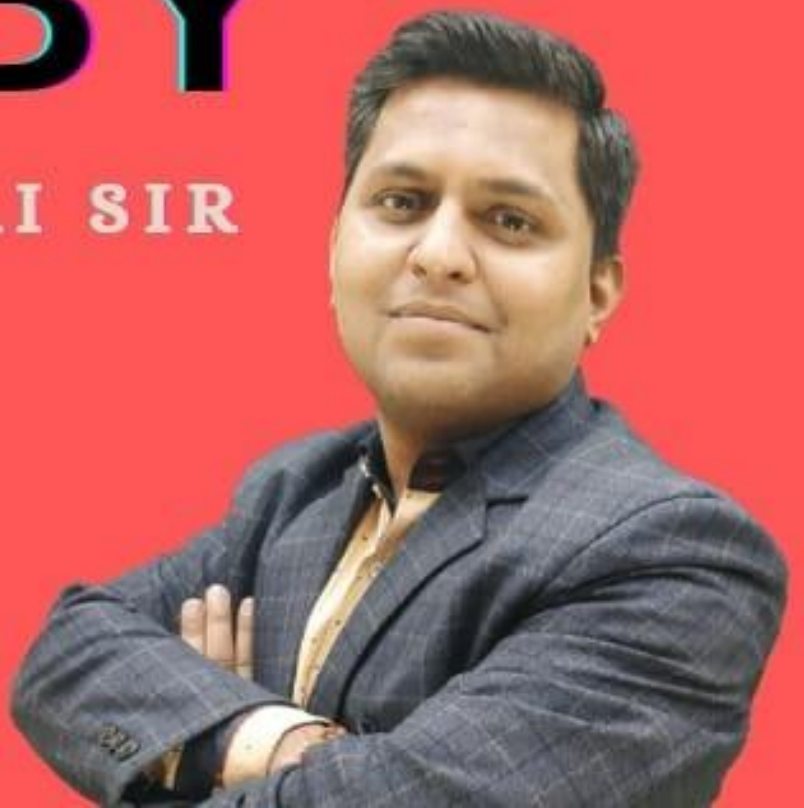

Question No: 1

निम्नलिखित में से कौन कलकत्ता का संस्थापक था?

Who among the following was the founder of Calcutta ?

(a) चार्ल्स आयर/Charles Eyre

(b) जॉब चारनॉक /Job Charnock

(c) गैरोल्ड अंगियार/Garold Aungier

(d) विलियम नौरिस/William Noris

Bombay

Question No: 2

लंदन में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के गठन के समय भारत का निम्नलिखित में से कौन बादशाह था?

Which of the following was the king of India at the time of the formation of the British East India Company in London?

(a) अकबर /Akbar

(b) जहांगीर / Jahangir

(c) शाहजहां /Shahjahan

(d) औरंगजेब / Aurangzeb

Question No: 3

भारत में 1613 ई. में अंग्रेजों ने अपनी पहली फैक्टरी कहां स्थापित की थी/ Where in India did Britishers set up their first factory in 1613?

(a) गोवा /Goa

(b) बंगाल में हुगली /Hoogly in Bengal

(c) अमरकोट /Amarkot

(d) सूरत /Surat

Question No: 4

1612

निम्नलिखित में किस अंग्रेज अधिकारी ने पुर्तगालियों को स्वाल्ली (Swolley) के स्थान पर हराया था? Which English official in the following defeated the Portuguese in place of Swolley?

Surat

(a) विलियम हॉकिंस / William Hawkins

(b) थॉमस बेस्ट / Thomas Best

(c) थॉमस रो / Thomas Roe

(d) जोशिया चाइल्ड / Joshia Child

Question No: 5

निम्नलिखित में से किसे 'स्वर्ग से उत्पन्न सेनानायक' कहा गया?

(a) अल्बुकर्क

(b) रॉबर्ट क्लाइव

(c) फ्रांसिस डूप्ले

(d) लॉर्ड कार्नवालिस

Who among the following has been called as a “Heaven Born General" ?

(a) Albuquerque

(b) Robert Clive

(c) Francois Dupleix

(d) Lord Cornwallis

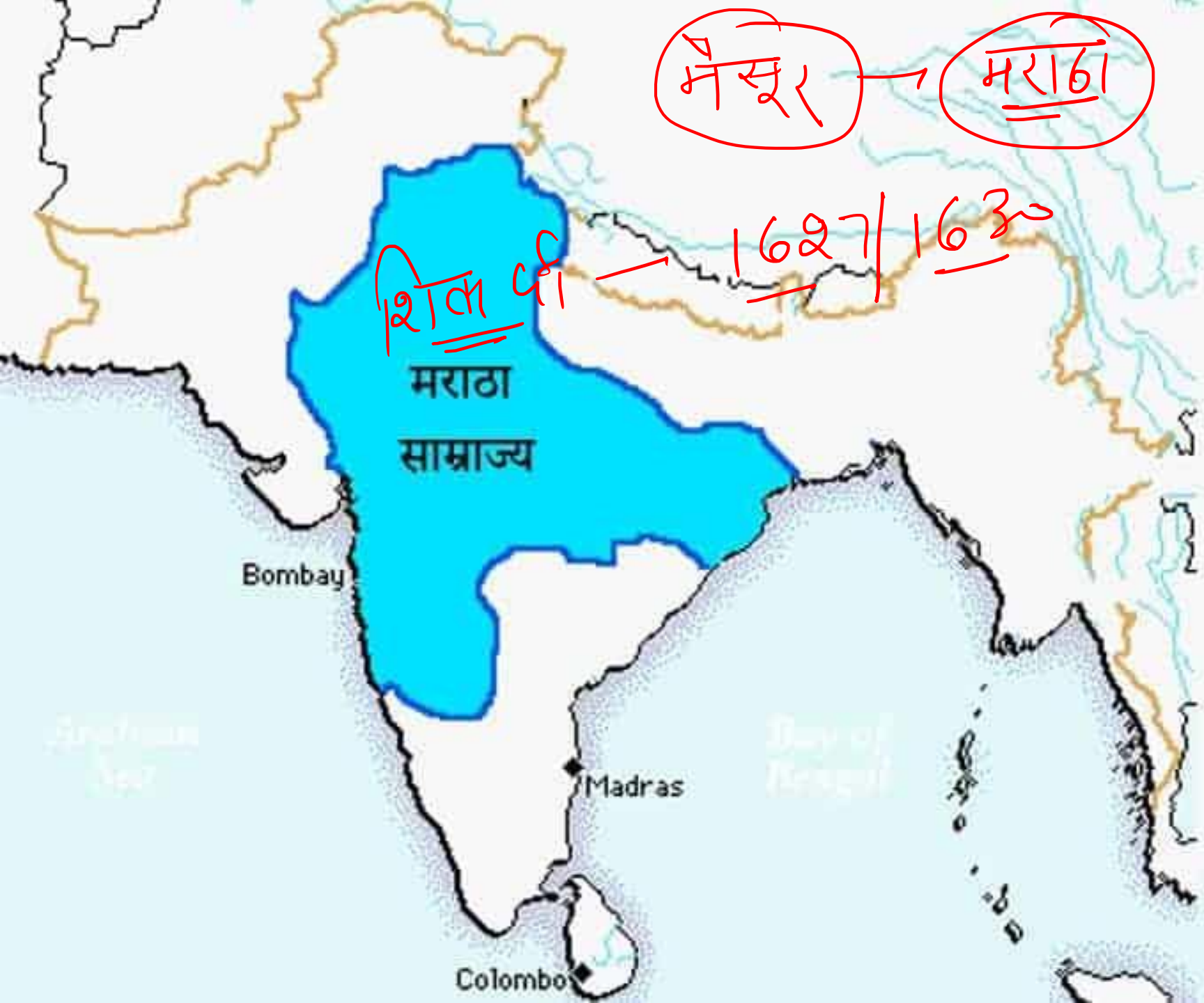

मराठा साम्राज्य

MARATHA EMPIRE

मराठा

- मराठा साम्राज्य के संस्थापक शिवाजी थे |
- माता : जीजाबाई
- शिक्षक : रामदास
  तुकाराम
  कोंडदेव
- पिता : शाह जी
- जन्म स्थान : शिवनेर दुर्ग (1627/1630)
- राजधानी – रायगढ़
- पुरंदर की संधि (1665) : शिवाजी और जयसिंह के बीच

Maratha

- Shivaji was the founder of the Maratha Empire.
- Mother: Jijabai
- Teachers: Ramdas,
  Tukaram,
  Kond dev
- Father: Shah Ji
- Place of Birth: Shivner Fort (1627/1630)
- Capital – Raigarh
- The Treaty of Purandar (1665) : Between Shivaji and Jai Singh

अंतर्गत किसानों से उनकी उपज का 20 प्रतिशत कर के रूप में लेकर बदले में उन्हें संरक्षण प्रदान किया जाता था।

गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा को प्रेरित किया था कि शासन उनके भाग्य में है (*राज करेगा खालसा*)। अपने सुनियोजित संगठन के कारण खालसा, पहले मुग़ल सूबेदारों के खिलाफ़ और फिर अहमदशाह अब्दाली के खिलाफ़ सफल विरोध प्रकट कर सका। (अहमदशाह अब्दाली ने मुग़लों से पंजाब का समृद्ध प्रांत और सरहिंद की सरकार को अपने कब्ज़े में कर लिया था।) खालसा ने 1765 में अपना सिक्का गढ़कर सार्वभौम शासन की घोषणा की। यह महत्त्वपूर्ण है कि सिक्के पर उत्कीर्ण शब्द वही थे, जो बंदा बहादुर के समय में खालसा के आदेशों में पाए जाते हैं।

अठारहवीं शताब्दी के अंतिम भाग में सिक्ख इलाके सिंधु से यमुना तक फैले हुए थे, यद्यपि ये विभिन्न शासकों में बँटे हुए थे। इनमें से एक शासक महाराजा रणजीत सिंह ने विभिन्न सिक्ख समूहों में फिर से एकता कायम करके 1799 में लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

मराठा

मराठा राज्य एक अन्य शक्तिशाली क्षेत्रीय राज्य था, जो मुग़ल शासन का लगातार विरोध करके उत्पन्न हुआ था। शिवाजी (1627-1680) ने शक्तिशाली योद्धा परिवारों (देशमुखों) की सहायता से एक स्थायी राज्य की स्थापना की। अत्यंत गतिशील कृषक-पशुचारक (कुनबी) मराठों की सेना के मुख्य आधार बन गए। शिवाजी ने प्रायद्वीप में मुग़लों को चुनौती देने के लिए इस सैन्य-बल का प्रयोग किया। शिवाजी की मृत्यु के पश्चात्, मराठा राज्य में प्रभावी शक्ति, चितपावन ब्राह्मणों के एक परिवार के हाथ में रही, जो शिवाजी के उत्तराधिकारियों के शासनकाल में 'पेशवा' (प्रधानमंत्री) के रूप में अपनी सेवाएँ देते रहे। पुणे मराठा राज्य की राजधानी बन गया।

पेशवाओं की देखरेख में मराठों ने एक अत्यंत सफल सैन्य संगठन का विकास कर लिया। उनकी सफलता का रहस्य यह था कि वे मुग़लों के किलाबंद इलाकों से टक्कर न लेते हुए, उनके पास से चुपचाप निकलकर शहरों-कस्बों पर हमला बोलते थे और मुगल सेना से ऐसे मैदानी इलाकों में मुठभेड़ लेते थे; जहाँ रसद पाने और कुमक आने के रास्ते आसानी से रोके जा सकते थे।

चित्र 7a शिवाजी का रूपचित्र

17वीं सदी के अंत तक दक्कन में शिवाजी के नेतृत्व में एक शक्तिशाली राज्य के उदय की शुरुआत हुई, जिससे अंतत: एक मराठा राज्य की स्थापना हुई। शिवाजी का जन्म 1630 में शाहजी और जीजाबाई से हुआ। अपनी माता और अभिभावक दादा कोंडदेव के मार्ग निर्देशन में शिवाजी कम उम्र में ही विजयपथ पर निकल पड़े। जावली पर कब्जे ने उन्हें मवाला पठारों का अविवादित मुखिया बना दिया जिसने उनके क्षेत्र-विस्तार का पथ प्रशस्त किया। बीजापुर और मुगलों के खिलाफ उनके कारनामों ने उन्हें विख्यात व्यक्तित्व बना दिया। वे अपने विरोधियों के खिलाफ प्राय: गुरिल्ला युद्धकला का प्रयोग करते थे। चौथ और सरदेशमुखी पर आधारित राजस्व संग्रह प्रणाली की सहायता से उन्होंने एक मजबूत मराठा राज्य की नींव रखी।

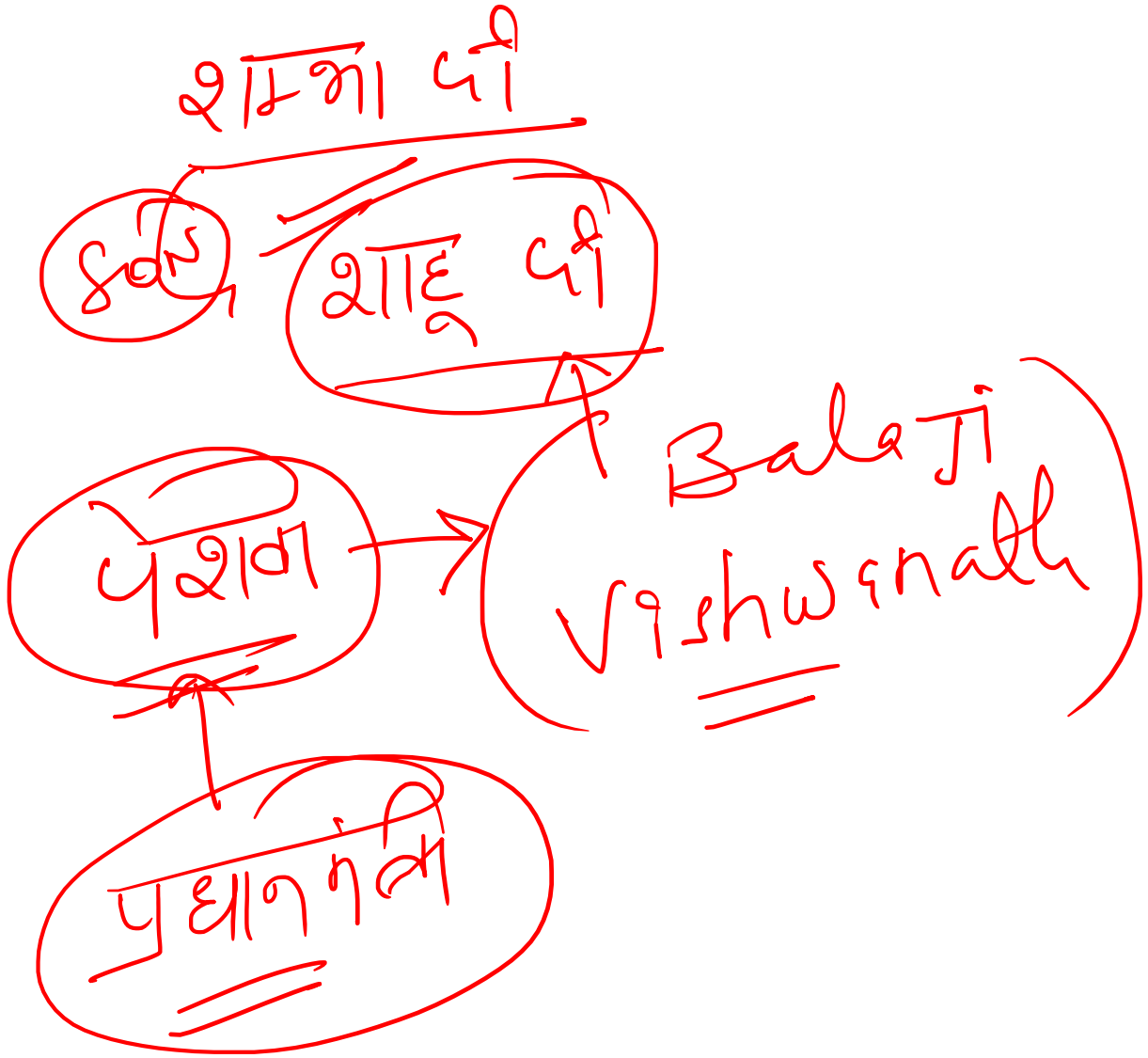

Under a number of able leaders in the eighteenth century, the Sikhs organized themselves into a number of bands called *jathas*, and later on *misls*. Their combined forces were known as the grand army (*dal khalsa*). The entire body used to meet at Amritsar at the time of Baisakhi and Diwali to take collective decisions known as "resolutions of the Guru (*gurmatas*)". A system called *rakhi* was introduced, offering protection to cultivators on the payment of a tax of 20 per cent of the produce.

Guru Gobind Singh had inspired the *Khalsa* with the belief that their destiny was to rule (*raj karega khalsa*). Their well-knit organization enabled them to put up a successful resistance to the Mughal governors first and then to Ahmad Shah Abdali who had seized the rich province of the Punjab and the Sarkar of Sirhind from the Mughals. The *Khalsa* declared their sovereign rule by striking their own coin again in 1765. Significantly, this coin bore the same inscription as the one on the orders issued by the *Khalsa* in the time of Banda Bahadur.

The Sikh territories in the late eighteenth century extended from the Indus to the Jamuna but they were divided under different rulers. One of them, Maharaja Ranjit Singh, reunited these groups and established his capital at Lahore in 1799.

The Marathas

The Maratha kingdom was another powerful regional kingdom to arise out of a sustained opposition to Mughal rule. Shivaji (1627-1680) carved out a stable kingdom with the support of powerful warrior families (*deshmukhs*). Groups of highly mobile, peasant-pastoralists (*kunbis*) provided the backbone of the Maratha army. Shivaji used these forces to challenge the Mughals in the peninsula. After Shivaji's death, effective power in the Maratha state was wielded by a family of Chitpavan Brahmanas who served Shivaji's successors as Peshwa (or principal minister). Poona became the capital of the Maratha kingdom.

Fig. 7a
Portrait of Shivaji

Towards the end of the 17th century a powerful state started emerging in the Deccan under the leadership of Shivaji which finally led to the establishment of the Maratha state. Shivaji was born to Shahji and Jija Bai at Shivneri in 1630. Under the guidance of his mother and his guardian Dada Konddev, Shivaji embarked on a career of conquest at a young age. The occupation of Javli made him the undisputed leader of the Mavala highlands which paved the way for further expansion. His exploits against the forces of Bijapur and the Mughals made him a legendary figure. He often resorted to guerrilla warfare against his opponents. By introducing an efficient administrative system supported by a revenue collection method based on chauth and sardeshmukhi he laid the foundations of a strong Maratha state.

पेशवाओं के बारे में :

1. बाला जी विश्वनाथ (1713-20)

❖ये पहले शक्तिशाली पेशवा थे|

❖इन्होने पेशवा के पद को अपने परिवार के लिए स्थायी बना दिया था |

About Peshwas:

1. Bala Ji Viswanath (1713-20)

❖He was the first powerful Peshwa.

❖He made the post of Peshwa permanent for his family.

→ Bajirao - Ist

(1720 - 40)

→ Death - Jabalpur

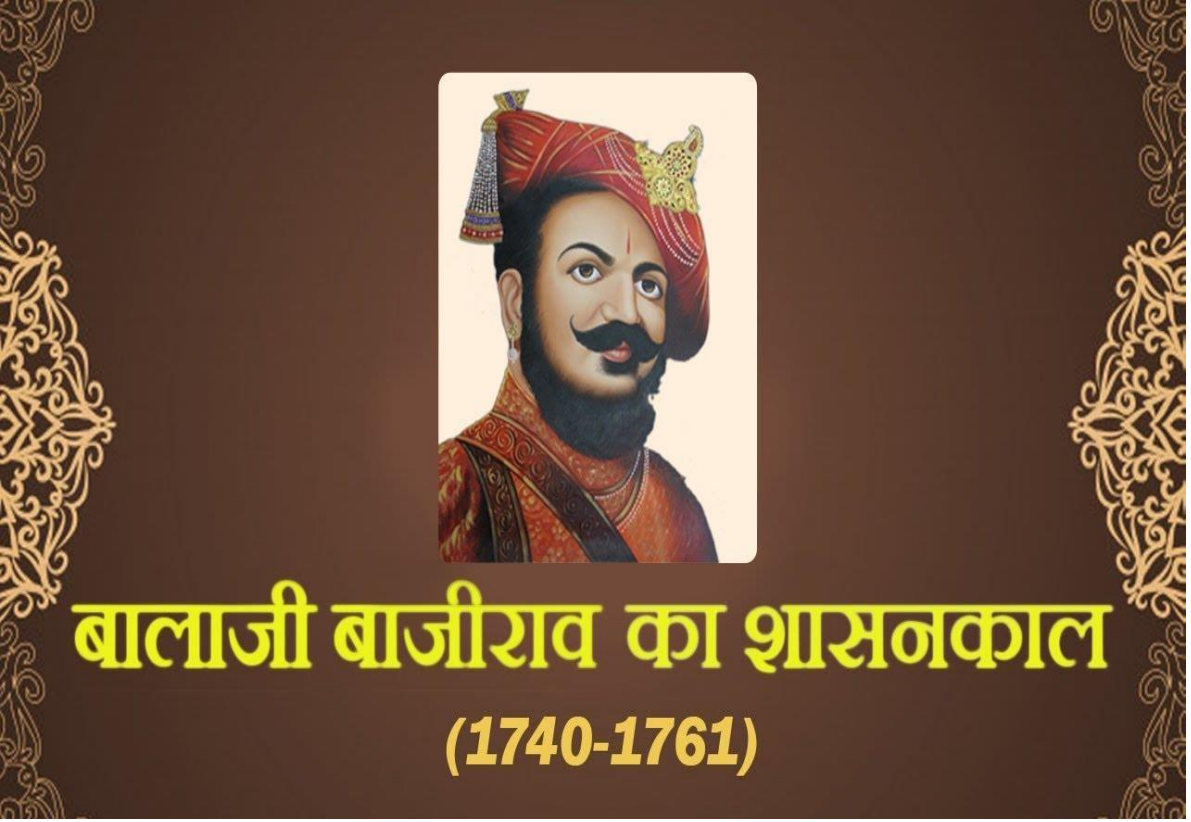
बालाजी बाजीराव का शासनकाल
(1740-1761)

2. बाजीराव प्रथम (1720-1740)

❖यह सर्वाधिक शक्तिशाली पेशवा था |

❖ये पहले पेशवा थे जिन्होंने दिल्ली पर आक्रमण किया |(1737)

2. Bajirao 1st (1720-1740)

❖He was the most powerful peshwa.

❖He was the first peshwa who invaded Delhi.

3. बालाजी बाजीराव: (1740-1761)

❖इसे नानासाहब भी कहते थे |

❖पानीपत का तीसरा युद्ध इसी के समय में हुआ था|

❖पानीपत के तीसरे युद्ध (1761) में अफगान सेनापति अहमद-शाह-अब्दाली ने मराठा सेनापति सदा शिव राव को हराया था |

3. Balaji Bajirao: (1740-1761)

- ❖He was also called Nana Sahab.
- ❖The third war of Panipat happened in his time.
- ❖In the Third War of Panipat (1761), Afghan general Ahmed-Shah-Abdali defeated Maratha Senapati Sada Shiv Rao.

मराठों के अंग्रेजों के साथ युद्ध

प्रथम युद्ध : (1775-1782)

❖यह युद्ध रघुनाथ राव की महत्त्वाकांक्षाओं का परिणाम था|

❖इस युद्ध का अंत सालबई की संधि से हुआ था |

First War : (1775-1782)

❖This war was the result of Raghunath Rao's ambitions.

❖The war ended with the Treaty of Salbai.

प्रमुख संधियाँ :

1. 1775: सूरत की संधि – रघुनाथ राव और अंग्रेजों की बॉम्बे सरकार का बीच

2. 1782: सालबाई की संधि – पूना दरबार और अंग्रेजों के मध्य

Major Treaties:

1. 1775: Treaty of Surat – Between Raghunath Rao and the Bombay Government of the British

2. 1782: Treaty of Salbai – Between Pune Darbar and British

मराठों से लड़ाई

अठारहवीं शताब्दी के आखिर से कंपनी मराठों की ताकत को भी क़ाबू और खत्म करने के बारे में सोचने लगी थी। 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई में हार के बाद दिल्ली से देश का शासन चलाने का मराठों का सपना चूर-चूर हो गया। उन्हें कई राज्यों में बाँट दिया गया। इन राज्यों की बागडोर सिंधिया, होलकर, गायकवाड और भोंसले जैसे अलग-अलग राजवंशों के हाथों में थी। ये सारे सरदार एक पेशवा (सर्वोच्च मंत्री) के अंतर्गत एक **कन्फ़ेडरेसी**(राज्यमण्डल) के सदस्य थे। पेशवा इस राज्यमण्डल का सैनिक और प्रशासकीय प्रमुख होता था और पुणे में रहता था। महाद्जी सिंधिया और नाना फड़नीस अठारहवीं सदी के आखिर के दो प्रसिद्ध मराठा योद्धा और राजनीतिज्ञ थे।

एक के बाद एक कई युद्धों में कंपनी ने मराठों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। पहला युद्ध 1782 में सालबाई संधि के साथ खत्म हुआ जिसमें कोई पक्ष नहीं जीत पाया। दूसरा अंग्रेज़-मराठा युद्ध (1803-05) कई मोर्चों पर लड़ा गया। इसका नतीजा यह हुआ कि उड़ीसा और यमुना के उत्तर में स्थित आगरा व दिल्ली सहित कई भूभाग अंग्रेज़ों के कब्ज़े में आ गए। अंततः, 1817-19 के तीसरे अंग्रेज़-मराठा युद्ध में मराठों की ताकत को पूरी तरह कुचल दिया गया। पेशवा को पुणे से हटाकर कानपुर के पास बिठूर में पेंशन पर भेज दिया गया। अब विंध्य के दक्षिण में स्थित पूरे भूभाग पर कंपनी का नियंत्रण हो चुका था।

गतिविधि

कल्पना कीजिए कि आपको श्रीरंगपट्म के युद्ध और टीपू सुल्तान की मौत के बारे में ख़बर देने वाले दो पुराने अख़बार मिलते हैं। एक अख़बार ब्रिटेन का है और दूसरा मैसूर का है। दोनों अख़बारों के लिए इन घटनाओं के बारे में एक-एक सुर्खी लिखिए।

कन्फ़ेडरेसी – गठबंधन

चित्र 11 - लॉर्ड हेस्टिंग्स।

चित्र 12 - किट्टूर रानी चेन्नमा की स्मृति में बनाई गई मूर्ति।

मराठों से लड़ाई

अठारहवीं शताब्दी के आखिर से कंपनी मराठों की ताकत को भी क़ाबू और खत्म करने के बारे में सोचने लगी थी। 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई में हार के बाद दिल्ली से देश का शासन चलाने का मराठों का सपना चूर-चूर हो गया। उन्हें कई राज्यों में बाँट दिया गया। इन राज्यों की बागडोर सिंधिया, होलकर, गायकवाड और भोंसले जैसे अलग-अलग राजवंशों के हाथों में थी। ये सारे सरदार एक पेशवा (सर्वोच्च मंत्री) के अंतर्गत एक **कन्फ़ेडरेसी**(राज्यमण्डल) के सदस्य थे। पेशवा इस राज्यमण्डल का सैनिक और प्रशासकीय प्रमुख होता था और पुणे में रहता था। महाद्जी सिंधिया और नाना फड़नीस अठारहवीं सदी के आखिर के दो प्रसिद्ध मराठा योद्धा और राजनीतिज्ञ थे।

एक के बाद एक कई युद्धों में कंपनी ने मराठों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। पहला युद्ध 1782 में सालबाई संधि के साथ खत्म हुआ जिसमें कोई पक्ष नहीं जीत पाया। दूसरा अंग्रेज़-मराठा युद्ध (1803-05) कई मोर्चों पर लड़ा गया। इसका नतीजा यह हुआ कि उड़ीसा और यमुना के उत्तर में स्थित आगरा व दिल्ली सहित कई भूभाग अंग्रेज़ों के कब्ज़े में आ गए। अंततः, 1817-19 के तीसरे अंग्रेज़-मराठा युद्ध में मराठों की ताकत को पूरी तरह कुचल दिया गया। पेशवा को पुणे से हटाकर कानपुर के पास बिठूर में पेंशन पर भेज दिया गया। अब विंध्य के दक्षिण में स्थित पूरे भूभाग पर कंपनी का नियंत्रण हो चुका था।

सर्वोच्चता का दावा

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि उन्नीसवीं सदी की शुरुआत से कंपनी क्षेत्रीय विस्तार की आक्रामक नीति पर चल रही थी। लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813 से 1823 तक गवर्नर-जनरल) के नेतृत्व में "सर्वोच्चता" की एक नयी नीति शुरू की गई। कंपनी का दावा था कि उसकी सत्ता सर्वोच्च है इसलिए वह भारतीय राज्यों से ऊपर है। अपने हितों की रक्षा के लिए वह भारतीय रियासतों का अधिग्रहण करने या उनको अधिग्रहण की धमकी देने का अधिकार अपने पास मानती थी। यह सोच बाद में भी अंग्रेज़ों की नीतियों में दिखाई देती रही।

लेकिन यह प्रक्रिया बेरोकटोक नहीं चली। उदाहरण के लिए, जब अंग्रेज़ों ने कित्तूर (फिलहाल कर्नाटक में) के छोटे से राज्य को कब्ज़े में लेने का प्रयास किया तो रानी चेन्नम्मा ने हथियार उठा लिए और अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ आंदोलन छेड़ दिया। 1824 में उन्हें गिरफ़्तार किया गया और 1829 में जेल में ही उनकी मृत्यु हो गई। चेन्नम्मा के बाद कित्तूर स्थित संगोली के एक गरीब चौकीदार रायन्ना ने यह प्रतिरोध जारी रखा। चौतरफा समर्थन और सहायता से उन्होंने बहुत सारे ब्रिटिश शिविरों और दस्तावेज़ों को नष्ट कर दिया था। आखिरकार उन्हें भी अंग्रेज़ों ने पकड़कर 1830 में फाँसी पर लटका दिया। प्रतिरोध के ऐसे कई दूसरे उदाहरण आप इस किताब में आगे पढ़ेंगे।

द्वितीय युद्ध : (1803-1805)

❖बाजीराव दितीय की सुरक्षा अंग्रेजों के द्वारा की गयी थी |

❖अंग्रेजों ने इसे पुणे में रखा था |

2nd War: (1802-1805)

❖Bajirao 2nd was protected by the British.

❖The British kept him in Pune.

— Bajirao – 2nd

तीसरा युद्ध: (1817-19)

- बाजीराव दितीय ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था |
- अंग्रेजों ने इसे हराकर बिठूर भेज दिया था |
- अंग्रेजों ने पेशवा का पद समाप्त कर दिया था |
- बाजीराव दितीय अंतिम पेशवा था |

Third War: (1816-18)

- Bajirao 2nd had rebelled against the British.
- The British had sent him to Bithoor by defeating him.
- The British had abolished the post of Peshwa.
- Bajirao 2nd was the last Peshwa.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

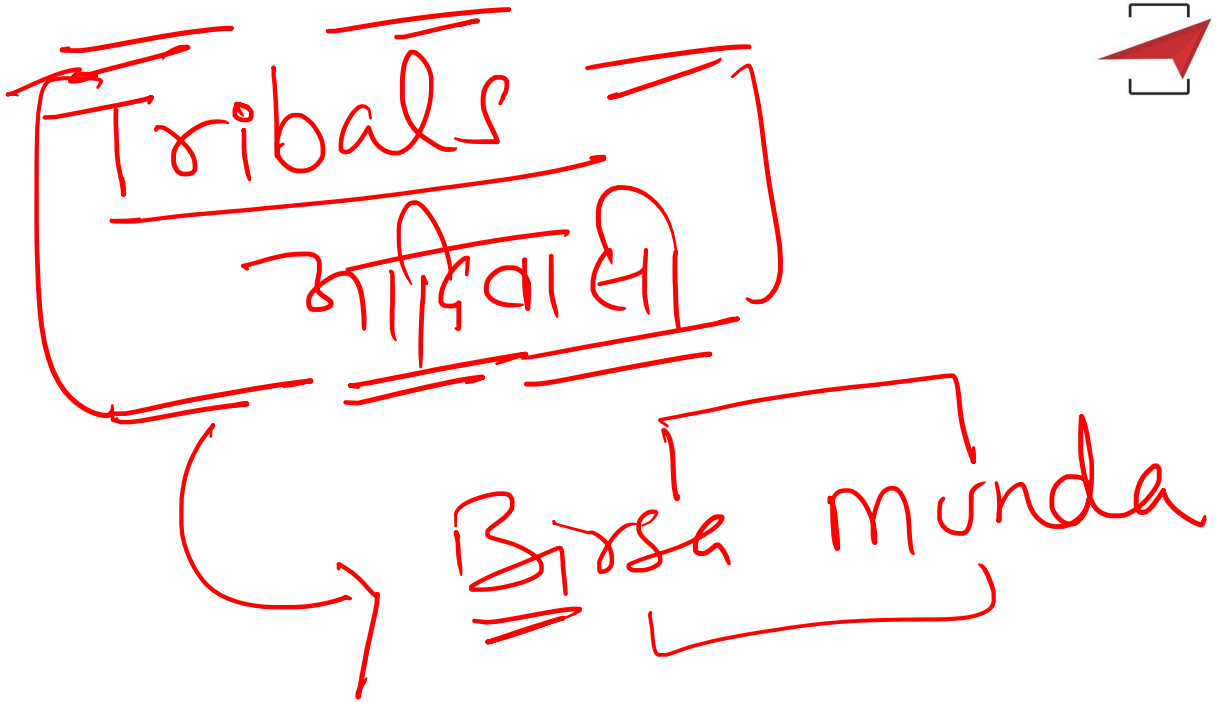

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

Dikus (outsiders):

बाहरी व्यक्ति

- British
- जमींदार + महाजन

Birsa Munda

Birsa was born in the mid-1870s. He used traditional symbols and language to rouse people, urging them to destroy "Ravana" (*dikus* and the Europeans) and establish a kingdom under his leadership.

Birsa's followers began targeting the symbols of *diku* and European power. They attacked police stations and churches, and raided the property of moneylenders and zamindars. They raised the white flag as a symbol of Birsa Raj.

बिरसा मुंडा

बिरसा का जन्म 1870 के दशक के मध्य में हुआ था। उन्होंने लोगों को जगाने के लिए पारंपरिक प्रतीकों और भाषा का इस्तेमाल किया, उनसे "रावण" (दिकु और गोरों) को नष्ट करने और उनके नेतृत्व में एक राज्य स्थापित करने का आग्रह किया।

बिरसा के अनुयायी दिकु और यूरोपीय सत्ता के प्रतीकों को निशाना बनाने लगे। उन्होंने पुलिस स्टेशनों और चर्चों पर हमला किया और सूदखोरों और जमींदारों की संपत्ति पर छापा मारा । उन्होंने बिरसा राज के प्रतीक के रूप में सफेद झंडा उठाया।

THE REVOLT OF 1857

1857 की क्रांति

"1857 का विद्रोह स्वधर्म और स्वराज्य के लिए लड़ा गया राष्ट्रीय संघर्ष था"

विनायक दामोदर सावरकर

➢ REVOLT OF 1857:

British Prime Minister- Palmrstone. ✓

Governor General of India- Lord Canning ✓

Mughal Emperor- Bahadur Shah Zafar. (II)

British Queen ⇒ Victoria - I^st

★ विद्रोह के समय इंग्लैंड के प्रधानमंत्री-पामर्स्टन थे।

★ भारत के गर्वनर जनरल-लार्ड कैनिंग

★ विद्रोह के समय भारत का सम्राट - बहादुरशाह जफर

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

sujeet bajpai sir

Revolt Of 1857 -

* Preplanned Date of Revolt - 31st May 1857.
* Reasons -

i) Chronic Reason → a) Heavy Tax on Farmer
b) Interference in Indian Society.
c) Annexation over Indian States.

ii) Immediate Reason - Doctrine of Lapse given by Dalhousie

a) States → SATARA, Udaipur (U.P), Sambhalpur, Rachat (Jhansi)

b) In 1856 → Annexation over Awadh on the basis of Maladministration.

c) Use of Greased Cartridges in Enfield Rifles.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमरउजाला

Revolt of 1857 — प्रतीक ⇒ Lotous & chapati
विद्रोह

कमल

⇒ विद्रोह को पूर्व निर्धारित Date 31st may 1857.

⇒ Reason – Chronic (दीर्घकालिक कारण)
किसानों पर अत्यधिक Tax.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

(Orthodox रूढ़िवादी)

⇒ भारतीय समाज में हस्तक्षेप (Interference) =

⇒ भारतीय राज्यों पर कब्जा किया जाना। विलय का सिद्धांत

Immediate Reason (तात्कालिक कारण)

⇒ डलहौजी के द्वारा Doctrine of lapse (विलय का सिद्धांत) दिया गया।

⇒ States – सतारा (MH), जैतपुर (उदैपुर) (U.P) Sambhalpur, Baghat, Jhansi (UP)

⇒ 1856 – कुशासन के आधार पर अवध पर कब्जा किया जाना।

⇒ Enfield Rifle में चर्बी वाले कारतूसों का प्रयोग। [Beef Pig fat]

Expansion Of Revolt-

a) Ist Outbreak - Barrackpur (Bengal).
* Mangal Pandey killed General Baugh on 29 March 1857.
* Mangal Pandey was hanged on 8th April'1857.
* He was the soldier was 34th Regiment

b) IInd Outbreak - [10 May'1857 (Meerut)]
* This was first major outbreak.
* Two regiments revolted in Meerut.
(20 NI & 3 LC)

c) IIIrd Outbreak - [11 May'1857 (Delhi)]
* Leader of revolt in Delhi was "Bakhat Khan."
* Leader of revolt of 1857 was "Bahadur Shah II"

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

विद्रोह का विस्तार Expansion of Rovolt

⇒ 1st विद्रोह — Barrackpur (बैरकपुर) (Bengal)

⇒ मंगल पाण्डे ने 29 मार्च 1857 को जनरल बाग (Baugh) की हत्या कर दी थी

⇒ मंगल पाण्डे को 18 अप्रैल 1857 को फांसी दी गई थी।

⇒ मंगल पाण्डे 34th Regiment के सिपाही थे

IInd विद्रोह

⇒ 10 मई 1857 मेरठ (मेरठ) → Start

⇒ यह पहला बड़ा विद्रोह था।
मेरठ में 2 Regiment ने विद्रोह किया था।
(मेरठ)

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

सामंजस्य

3rd विद्रोह – 11 May 1857 (Delhi)

⇒ दिल्ली में विद्रोह का नेता बख्त खाँ था।

⇒ 1857 के विद्रोह का नेता बहादुरशाह II था।

⇒ विद्रोह की असफलता के कारण —

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

CENTRE	LEADER	BRITISH OFFICER
Delhi	Bahadur Shah & Bhakhat Khan	Nicolson and Hudson
Kanpur	Nana Sahib and Tatya Tope	Campbell
Lucknow	Begum Hazrat Mahal	Havelock
Jhansi & Gwalior	Rani Lakshmi Bai and Tatya Tope	Hugh Rose
Jagdishpur	Babu Kunwar Singh	William Taylor and Winset Eyre
Faizabad	Maulavi Ahmadulla	General Renard
Allahabad	Liyaaqt Ali	Colonel Neil
Bareily	Khan Bahadur	Winset Eyre

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

विद्रोह का विस्तारः

	केन्द्र	नेता	विद्रोह दबाने वाले ब्रिटिश अधिकारी
1.	दिल्ली	बहादुर शाह एवं बख्त खां	निकोलसन एवं हडसन
2.	कानपुर	नाना साहेब एवं तात्या टोपे	कैम्पबेल
3.	लखनऊ	बेगम हजरत महल	हैवलॉक
4.	झांसी एवं ग्वालियर	रानी लक्ष्मीबाई	ह्यूरोज
5.	जगदीशपुर	बाबू कुंअर सिहं	विलियम टेलर एवं मेजर विन्सेट आयर
6.	फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला	जनरल रेनार्ड
7.	इलाहाबाद	लियाकत अली	कर्नल नील
8.	बरेली	खान बहादुर	बिसेट आयर

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

Reasons Failure Of Revolt -

sujeet bajpai sir

* Lack of Co-ordination.
* Lack of Weapons.
* Lack of Support of Indian rulers and Educated Class.

Sep '19

Effects Of Revolt -

* Rule of East India Company was ended in India.
* India come under direct influence rule of British crown
* Victoria - I was declared as 1st queen of India.
* Two new offices were created -
  - ii) Viceroy
    - In India.
    - Ist - Canning
  - i) India Sectrelary
    - In London
    - 1st viceroy - stanely

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

⇒ विद्रोह की असफलता के कारण —

⇒ (1) Lack of Co-ordination (समन्वय)

(2) Lack of Weapons

(3) Lack of support of Indian ruler & [Education class.]

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

Effects of Revolt (विद्रोह के प्रभाव)

⇒ भारत में East India Comp. की शासन समाप्त हो गया था।

⇒ भारत ब्रिटिश शासन के प्रत्यक्ष प्रभाव में आ गया था।

⇒ Victoria I को भारत की पहली रानी घोषित किया गया था।

⇒ 2 New offices (पद) were created

(1) भारत सचिव (India Secretery)
1st London
1st वायसराय – stanely

(2) पहला वायसराय in India 1st Canning.

LAND REVENUE
SYSTEM DURING
BRITISH INDIA

1. स्थायी बंदोबस्त (1793) या स्थायी जमींदारी या इस्तमरारी (ठेकेदारी)

- इस व्यवस्था का आरम्भ कार्नवालिस ने किया था |
- उद्देश्य- ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में निश्चित आय प्राप्त करना चाहती थी |
- क्षेत्र(Area)—बिहार,बंगाल,उड़ीसा
- सूर्यास्त कानून का सम्बन्ध स्थायी बंदोबस्त से था |

1. Permanent Settlement (1793) or Permanent Zamindari or Istmarri (Contract)

This system was started by Cornwallis.

Objective: The East India Company wanted to get fixed income in India.

Area-Bihar, Bengal, Orissa

The sunset law was related to permanent settlement.

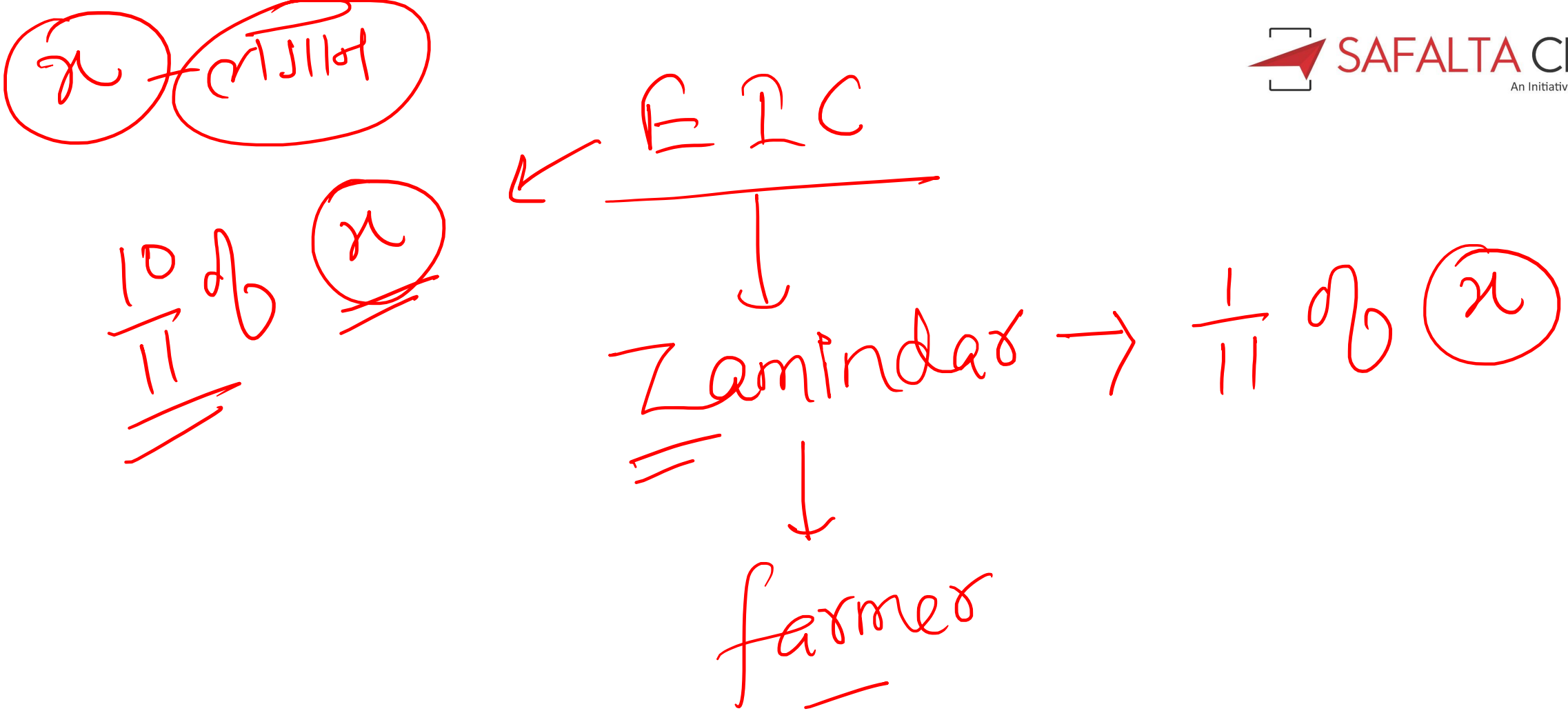
EIC
Zamindar
farmer

2. रैयतवाडी बंदोबस्त (1820)

- इस व्यवस्था का आरम्भ अलेक्जेंडर रिड और थॉमस मुनरो ने किया था |
- इस व्यवस्था का आरम्भ मद्रास में हुआ था|
- इस राजस्व बंदोबस्त को सर्वाधिक क्षेत्रों पर लगाया गया था |
- बॉम्बे में इस व्यवस्था का आरम्भ एल्फिन्स्टन ने किया था |

2. Rayotwadi Settlement (1820)

- The system was initiated by Alexander Reed and Thomas Munro.
- This system was started in Madras.
- This revenue settlement was imposed on maximum area.
- The system was started in Bombay by Elphinstone.

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

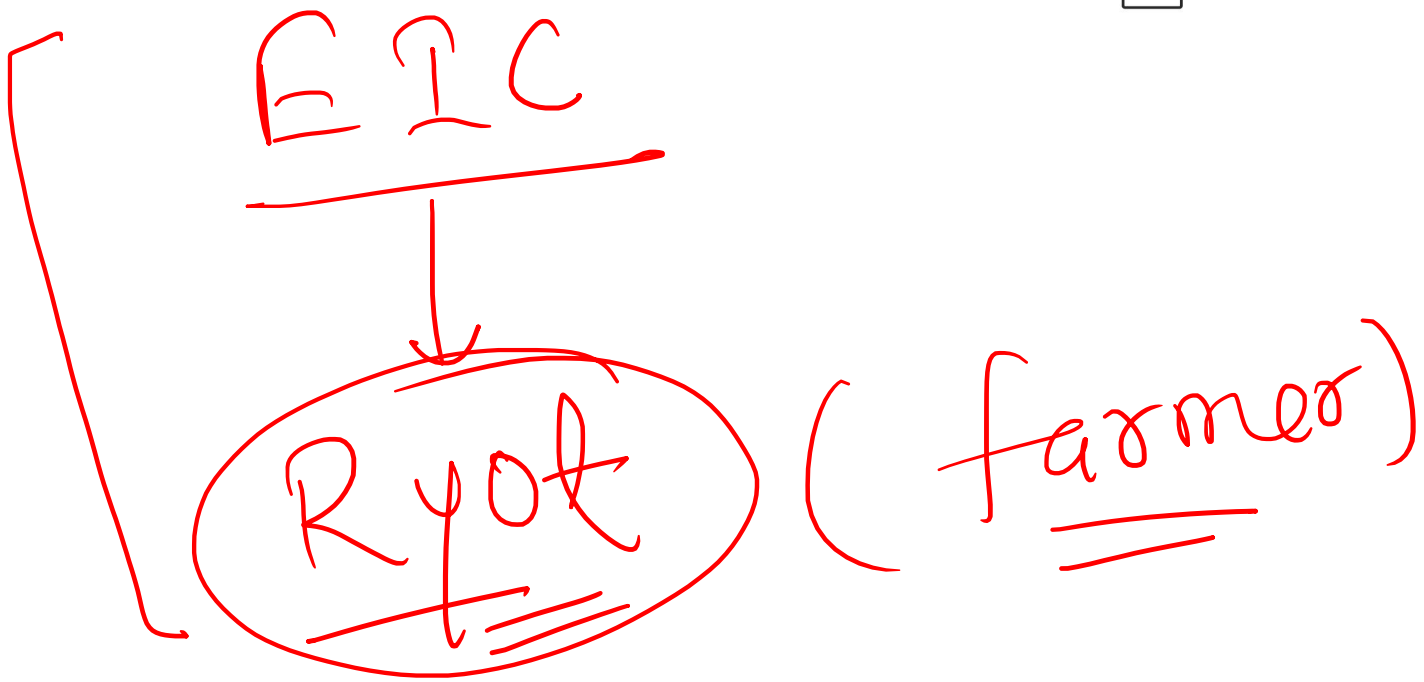

3. महालवाडी बंदोबस्त (1822)

- इस व्यवस्था का आरम्भ Holt Makenji ने किया था |
- ईस्ट इंडिया कंपनी रैयतवाडी व्यवस्था के दोषों को दूर करना चाहती थी|
- क्षेत्र (Areas): पंजाब, मध्य प्रान्त, सयुंक्त प्रान्त

3. Mahalwadi Settlement (1822)

- The system was initiated by Holt Makenji.
- The East India Company wanted to remove the defects in the Rayotwadi system.
- Area: Punjab, Central Province, United Province

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमरउजाला

EIC

↓

Mahal (Group of Villages OR A Village)

⇒ [सरपंच | Headman]

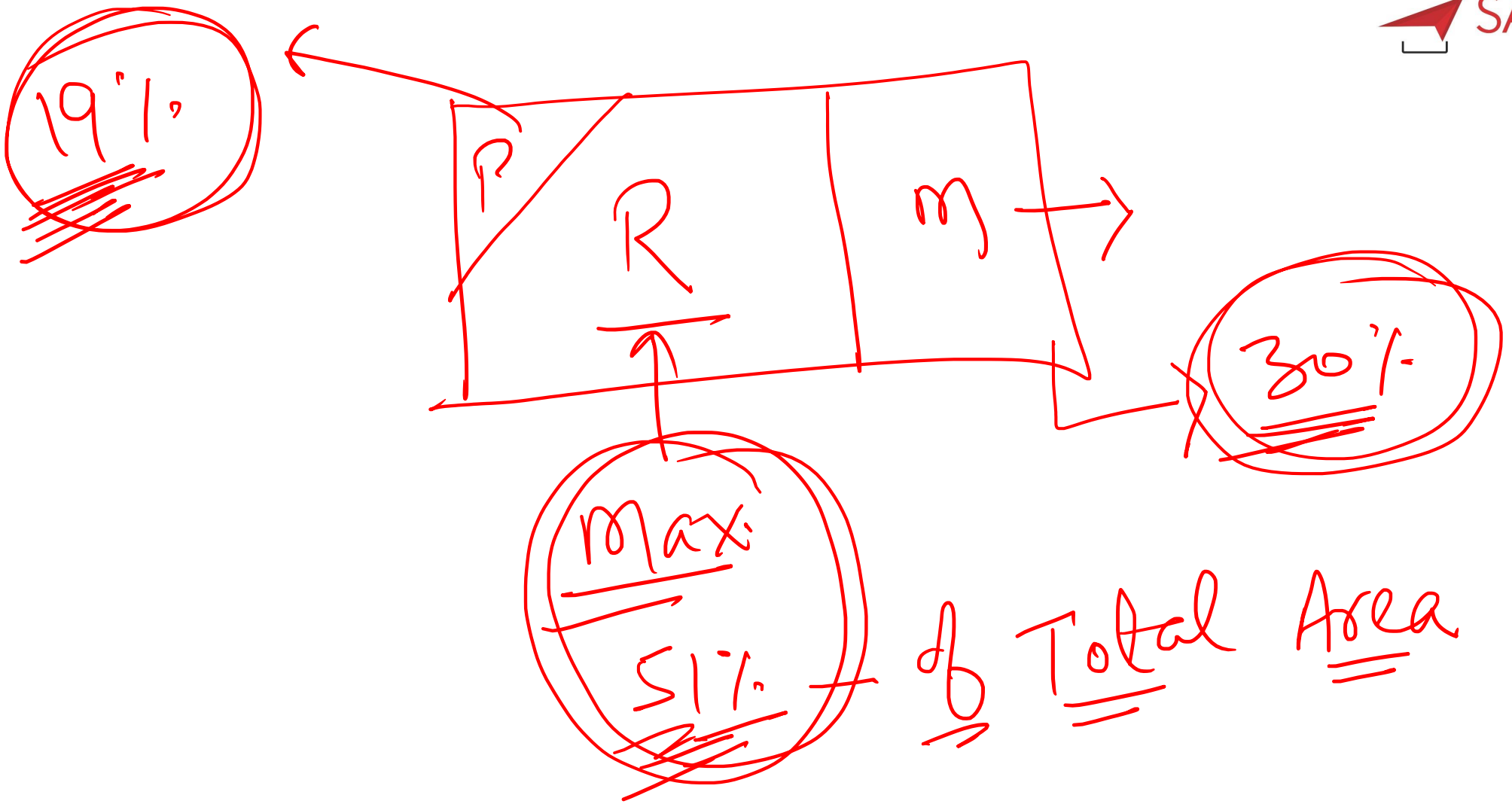
19%
P
R
m
30%
Max
51%
of Total Area

Social Reforms

समाज सुधार

DW

① Brahmo Samaj (1828 | कलकत्ता)

Raja Ram mohan Roy

William Bentick (विलियम बेंटिक)

1829

Books ⇒ ① Gift to Monotheists
ईश्वरवादियों को उपहार

② Precepts of Jesus

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

> News Paper

↳ Mirat - ul- Akhbar

मिरात - उल - अखबार

> पत्रिका ⇒ Samvad Kaumadi

संवाद कौमुदी

SAFALTA CLASS™
An Initiative by अमर उजाला

- Polyglot
- [Bristol (London)
  ब्रिस्टल]